

ASHA ARCHIVES 2944 I

वैकव्यकेशनाविस्तारबोधमहाबलियुजा॥ ॥समयवक्ररुथागंतव
वदवाश्वाहूलिवाहूलवडमूहनयना॥ ॥सिक्कवैकहृगावोलिः
॥राश्यविकवैकमहाबलियुजा॥ ॥बोधकवैकापिरुवन्नगयनर
महमाहमर्जवृषियमहावा॥ ॥ ॥**रागालिना**विषयविषय
निमग्नपरांमनमनमिपलाकनिनाजिकचर्मीशदहयिदिन

॥ देवी ॥ ॥ अहं हि महादेवी. पृथिविमातृनी शसर्वसत्त्वसंपूर्णवि
ता ॥ ॥ यीमवर्तुसोम्यापूयीनी देवी शस्यज्जहयकत्र. लोकसंगाननी
॥ कनकरुडघट. वामकवधनी शस्यकत्रज्जहय. लोकसंगाननी ॥
॥ दिवालंकासरुविगदहा शस्यनोयूननिर्धोषधीवसन्धवा ॥ ॥
॥ आचार्य ॥ ॥ निर्मानावृज्मल्लगनकलभ. यश्चमृगमययवियन्ति

मा श्रितिवमर्गहि दय. सवानीनवर्तुवृज्मल्लगनकलभ. यश्चमृगमययवियन्ति ॥ ॥
हं कनकरुडघट. वामकवधनी शस्यकत्रज्जहय. लोकसंगाननी ॥ ॥
अहं हि महादेवी. पृथिविमातृनी शसर्वसत्त्वसंपूर्णविता ॥ ॥
॥ यीमवर्तुसोम्यापूयीनी देवी शस्यज्जहयकत्र. लोकसंगाननी ॥ ॥
॥ कनकरुडघट. वामकवधनी शस्यकत्रज्जहय. लोकसंगाननी ॥ ॥
॥ दिवालंकासरुविगदहा शस्यनोयूननिर्धोषधीवसन्धवा ॥ ॥
॥ आचार्य ॥ ॥ निर्मानावृज्मल्लगनकलभ. यश्चमृगमययवियन्ति ॥ ॥

२५७२४॥

[illegible]

१५७

[illegible]

नरुभाश्चक्रवाचकमष्टियासभाभमकूठकमदिगविना॥ ॥२२२॥
 भावसमयवायासमयसूचीभावकावाश्चमविवाहिनीवज्रवावाहि
 रुदासहियाभावभावा॥ ॥सावित्रायनवर्गसूचमयनेकथ्यचरुव
 यिर्गवावाश्चगगधोनीवावर्तुवदिभक्तानामवमकुलरुवनीना॥ ॥
 विद्यन्तडषण्डकादिगवसम्भनययिसयिभनारुकावाश्चमविवाहि

नीवज्रवावाहिरुक्कविनदखमिर्जुधना॥ ॥गावकिलीलावज्रकलि
 याडनसमगुनववल्गवाल्हश्चमयाज्जनर्दहलिरालमकुलसम्भन
 वज्रवावाहि॥ ॥ ॥रुक्मवीचयथा॥थनमकुलद्वयक॥१॥नागवज्रगी
 ॥चक्रिकुलकण्ठिवाचकमखलरुषिगगीवकुलनवसिलमालाश्रीलं
 चक्रिचक्रिनेयारुस्मविहृषिगगागधगात्रिवन्ध्रविवाया॥ ॥युक्तवसि

हनुवदभाबूको लाया रुग्णनाथजी सम्वनवाया ॥ ॥ वज्रकवाठकहा
 थयलिया कलुक्किया उखवांगशसंगठ यागिनी कमलविहारांगलम
 हासुवमेवियभादे ॥ ॥ वज्रवावाहिआलिगल सम्वननाचयिवइवि
 हरुंगशवाइलिकाविनेया कीदोनेहनुव अइरुवहननससंग ॥
 ॥ सरुजसंविहिनेया गावकि कथुयाल जीहनुवचनयभादेश्यरु

आलिगल कीदकिहनुव विना भयिभूयकनूभा ॥ ॥ ॥ **थनवि**
चवया ॥ गीन ॥ विवक ॥ ॥ **थनमूडा गाय ॥ राग ललित ॥ सादभरानय**
 कननिनकि नीलवासा नाथि गात्रवाज एरा शस्तुमाल आरुवम किमि
 उरुसयना नयासिनेनयमनिहना ॥ ॥ **दवीकदियं कुलियं किमिनि**
 किउरुना नमनीना शदहिन आनिहसुह वलसिविका ना विनिनयनअ

सोदभरान ॥ ४ ॥

गिय नूवा ॥ ॥ मिहसुहम उलमा मावसिनवगाया मृगु थधननिनवक
 या २ कनाटे खर्य नख द्वागानु कदायय ॥ मिहसुहमामकूठक मकया ना ॥
 ॥ पञ्चमथा गगद हसी च उदवी कस्य जानू देवी ऊ यावनि ऊ य २ ऊ गगमा
 नना भन सय नऊ गमा मा गहि सिमा हि मृगिका नुर्य ॥ ॥ रुवठ देव रुद
 मनि विनय सूत्र गवऊ कस्य जानू देवी गुनू पभा दं २ अचिय क वि किं यिनहि

स्य ऊ ह ना थराव मृगु हरिय ॥ ॥ ॥ थन मथा गग न यथा ॥ ॥ ॥ ॥ थन मथा गग न यथा ॥ ॥ ॥
 ॥ सय निमलि न म उल वरु २ उ कि न दू गय ना क वि नान ॥ ॥ सय निना
 दि न रुय मने कं २ ग द नू वगी न व ले म ना हं ॥ ॥ पञ्च वृद्धात्मक सर्व जहा
 यं २ य स्य कू ना दि न कू विरु कू दि वां ॥ य ग हि य कू म हा स ह ना मा नू र्य गुगी
 न व न न म ना हं ॥ ॥ साव क या न म नि हि न हि कू यं २ ना थ च नि व न अ

सय निमलि न म ॥

धनत्रयविर्यावृद्धवन्नवृद्धगुणसंशयनिर्मुक्तिदिगुरुविषयसंशु॥ ॥ व
 द्धनिर्जनकदायनिमृष्टिगुणनवृद्धं शिवृद्धविरावनयाविर्यानिर्गमिदं स
 कर्तव्यं॥ गेनाहं हं शगेनाहं हं गं हं हं॥ ॥ ॥ धनमनुलसदकि
 ॥ ॥ सागमात्रव॥ निजगुणवधूवहृन्वजायाश्चीरुगगमनजागिनी
 ययिष्य॥ ॥ आनदादिदवावाहृतिआनदादिदवाश्यविनावनि

हृन्वमनसंयुक्तं ॥ ॥ यस्मिन्निहिरुन्निजकनूहृन्ववश्चर्वनीञ्जन
 हायिवयिसंभाक ॥ ॥ धीअडिगानकलयिवडाविशगीमञ्जनतकि
 नमिवाङ्कन ॥ ॥ अलिकालिद्रियादधनकश्चनउत्तागिनीमंगल
 गीन ॥ ॥ ययिसयिवविनीअद्वयसंहावश्चिदकिममलवज्जलिग ॥
 ॥ घसनीधानीवनीवताविश्चयनवउत्तमहृन्ववताया ॥ ॥
 कलिस २

कायि नर्वसा ॥

॥ थनभिषयसय ॥ रागमादि ॥ कायिलीर्वसा वा किलवीना ॥ अरु ममर्वद
व. किञ्चुवनलीना ॥ ॥ अन्यमवृत्तिल. दानकनेया ॥ रुठिलमद्विसिद्धि
नादियभादा ॥ ॥ गंगामुना. एदियगकि ॥ पिनेनविमभि. गग
ददवाने ॥ ॥ उदिलालवडा. नविमूर्खा ॥ गगललषलमा. यवनहि
दाने ॥ ॥ यवनधनाले. एकवन्ध ॥ शवियनिगकनल. दानकसिसिद्धा ॥

विमिलायन ॥

॥ ॥ थनदभयनिगय ॥ सग्वीवि ॥ ॥ सगिकु. यरु. गालल्लास्यन
दिनमस्का. गी. विम्वस. रु. लादि. कथन ॥ गी. निर्माना. व. ॥ राग. ग
भा. र. वि. ॥ विनिलायन. व. उ. व. वि. ला. ॥ क. व. रु. य. नि. द. म. ॥ ल. द. म. ॥
॥ ल. म. द. म. क. व. यि. या. ॥ रू. रू. न. हि. व. उ. मा. ला. ॥ रा. ग. द. व. म. ॥ ह. व. दि. न. द. दि.
॥ ॥ य. रु. द. व. ॥ उ. पा. य. न. व. जा. ॥ न. वि. म. नि. वा. य. नि. म. ॥ वा. र्था. व. यि. थ.

॥ वागदहिनकः स्रवदियायुश्चलियवज्जाननः आहूतिदीना
 ॥ कर्तुवाचकः मर्यादवलिमश्वायुसंलान्वित्यवाधा ॥ ॥ ॥
 गीता॥ नकावधुनमहं देववर्मा ॥ आहूति॥ रागाय चमः कलिन
 वज्जाननः नविमनिकृच्छिकृजवयिउंकावनादनुयाश्चदनुयागयिउ
 वनलीनाययिसयिजिनमनिविदनुया ॥ यवमानदमन्मिनयध

निकादाधियभीमश्चवज्जश्चंआहूति॥ कादाधियधीर्महवजा ॥ ॥ क
 लिहकमलसंजागसहजयवनमर्गसालिनगानिश्चयमृद्वषट्कुज्जत
 मकुठमीनीकृष्णीमाननदहिनवाम ॥ ॥ ॐ नमः उलोपविक्जययकि
 कृष्माण्डगनयकालिगाश्चज्जवज्जमनदहिनकवधनिवामयधालयत्रा
 यधनि ॥ विविगनलारवणविरुषिगहनयिज्जुनगमन्निधवाश्च

ऊनयायि॥ ॥ वडसमकमुनिसिज्ञाकथ्यनवावनया० २मनयअः
 धनमालिगदिरनूवाऊनया०॥ ॥ यषूनवककलनसूझासूधनम
 नयायिशनिनसूझगचडावयिः नहिऊनायनया०॥ ॥ ॥ ००॥
 इविकु॥ ॥ ००॥ नमस्थीवऊवानाके॥ धनसिज्ञाद्वियकु॥ गीगपधन
 धनगुमसूझकस्वागमवि॥ धनगमऊनया॥ ऊमनिकावलिविया॥ गानल्लाय

धननदिनमस्कावका॥ गीनविश्वसू॥ गीत॥ रनागरेववि॥ रवजिनम
 कूठकिनमिमिलिखनननयगम॥ ॥ सादियवऊसल्लयनमन्धन
 यनमयदं॥ ॥ गमऊननिवदुयी॥ कूठकूठददधन॥ ॥ नावि
 उरुलनसंवाविउगुकीकूठकमलयगम॥ ॥ ॥ रनागरेववि॥
 महिमल्लमनसमडाऊनधनऊरुनउदकविम्वडा॥ ॥ यषूनम

रवजिनम॥ रवजिनम॥

नमिद्य नयनगयन २२ स्वयनिहासयि जिन्नगुनवाया ॥ ॥ क (धध)
 निः० दि० या विषयसर्वका २२ समदुगर्गग जिन्नगुनका ॥ ॥ यवन
 ॥ इयि र्देया इरुस्तिन विद्या २२ लयिवजानन २२ इदि इदा इया ॥ ॥
 सुगनरुनिहावयिया नहायि नसध २२ नगवज रुनेयि अविन्नयवद्धा
 ॥ ॥ ॥ यनसिधसय ॥ गीन द्वविनि ॥ ॥ यनयरु विधिर्था ॥ नदि

नमस्का ॥ गीन विन्धसवृह ॥ गीन कथन ॥ गीन निर्मानावृज ॥ गीन विनि
 लाय ॥ गीन कलिनवजानन ॥ गीन कला ० ॥ गीन ॥ २ वाग नवावलि ॥ सर्व
 वद्धविवृद्धमष्टिगा विन्धमालनिकुदिगा २ वज यागिनिवजमष्टिग कावध
 वसिद्धिलायनि ॥ ॥ नमामि २ वाहलि सिद्धियागिनीगधमष्टिगा २ अरु
 अद्धियागिनीगधमष्टिगा ॥ ॥ आदित्यमष्टिग कज समवसदीयमालासवि

२ मयवृद्ध ॥

मि२

मनाश्चक्रिहृत्तुलकठिलोचकमवतलविरुषिता॥ ॥कवगिद्वर्षयमा
वक्तुदिनिमकूटकविदिगमवाश्म३मालावर्वांगमठिगालल्लजि कार
यकवा॥ ॥उमदवीचकूनकासयनविन्धवियायिनाश्चुंरुवयन
मिलंगमधलियाअवध्वकठुयागावयि॥ ॥ ॥~~नागरवठयि॥~~
दंविनिमयवयनविनासकयिस्यश्च०रुलाअमठुहोनाया॥ ॥५५का

देविनिश

हमलजगगनिर्वासिया॥ ॥अमियश्चनिर्वंजनदलाश्चसुदसुद
नीययाजिनरुययिसे॥ ॥५५उयागिनीचलमलश्चजवानादिआ
लिगलकीने॥ ॥५०रुलाअकनूकवानीश्चयंश्चालिगधनीनव
लुवात्रि॥ ॥ ॥॥~~लमकासर्वगधगगाधर्मसर्वगाधगगावयं~~
~~वधमगानेनालादलमठुल्लमरुमे॥ ५॥सर्ववकधर्मयुं~~सर्ववकधर्मयुं

न सम करुड कायार्गः शेषमनुलंभरुमी ॥ ६ ॥ **सर्वधर्मागमं रू न ह्यनवर्था**
विश्वधर्मा सम करुड वा वागः शेषमनुलंभरुमी ॥ ७ ॥ **सर्वसत्त्वमहाविह**
गुह्यं यत्किमिनिर्मलं सम करुड विहगः शेषमनुलंभरुमी ॥ ८ ॥ **संयय**
 सर्वजगत्सना नृथयदं सर्वन नानादिना ॥ यीत्वा सर्वविकल्पमाह क नर्वाज
 किनीह नृकादिना ॥ यश्च कय निवर्तकः कि धगु म ह्यनवर्था माह क नर्वाज ॥

यस्या कस्या कया नृवहस्य मनसान्तर्यं यर्भस्य दिना ॥ १ ॥ **॥ १ ॥ नागकर्तु**
दि ॥ गिरुज वापयि यागिनि दह कवा विश्वमल कूलि मय ७ क न ह्यवीना ॥
 ॥ यागिनी नृक विन ह्य न ह्य नदी वयि २ गो नाम ह्य वी विया न क मल सयिव
 यि ॥ ॥ क्रय ह्य यागिनि नय न जायि २ म नि कूल वदि या न ३ ॥ ३ ॥ यान स मा
 न ॥ ॥ सा स ह्य न द्या न क वि य ना न २ व द्य सूर्य इयि य क न ह्य ना ॥

॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥

सुभाषितानि

थऊगनयालिनमहकीरुवाया॥ ॥म्वनिविहिनवामजानकःस्थान
 वदनजिलावनाशककनाकसुरुवरुयंकनअविनविघ्नविहंगा॥ ॥ब
 मरुनिहनमघयमायादर्यदभनसूनीनाशुद्वानियिठिगाधनसघकि
 ननविघ्नरुगा॥ ॥विविधिनतज्जुरुवतलरुषिनदिवनतसूमोनीशु
 गरुवाद्यासर्वसम्यक्तिमिद्विवनहलदारायोंक॥ ॥ ॥रनागहवर्ककाज

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ किञ्चिन्नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विष्णुसहस्रनाम ॥ १४॥

नविनासयि॥ ॥ ॥ रागा कामादाय कलिक हूं का ना रुवमने निरुं
दनीन कलसमर्हो देशविष्णु कलिक गृष्टिक नर्भन त्रम कूटकाद्यधिर्य॥
॥ नमामि श्रीवत्सुवीर्न रुवसि च नर्भन शविष्णु नाथ किं वन यापिक वया नि
विष्णु रूपाय ॥ ॥ नमो कलिक नमो किं वन वीर्न सर्व ह कल व न दधन नं
वाभन कलिका विष्णु रुवा निशा भन वधन कन नं ॥ ॥ नाना वला हव नो

यना कलिका विष्णु नरुपि न द हं श्द ह्य कना ल सीम मव द नं किं वन यापाय
वत्सुवीर्न ॥ ॥ वा ना विप सर्व रुय द न नं यम विष्णु वा ना कम न सा २ सूत्र
नवयका दव न्दि मया दं सर्व सिद्धि मा कुरु ल दं ॥ ॥ ॥ रागा राभा
रुव वि ॥ ॥ दिरु रूपाय क मरु व स ग व रु वि न दं नाना वला रुव ध म कूट क र्भ
॥ ॥ नमामि श्री हव न गिय रु रूपाय श्री शक्ति वन यापिक दिन रुप न द

विष्णुसहस्रनाम ॥ १४॥

[illegible][illegible]

श्रीगणेशाय नमः

[illegible]

धीं॥ ॥ पूर्ववेनावननत्तसंरुयन्निमवियायिमाशुडरुनञ्जमाघसिद्धिमा
 ज्यञ्जकृत्यसमयानन्दरुनगिरिहायि॥ ॥ समाधिशीमन्त्रनमाग्यधीकावव
 कदवजाकायवियायिमाश्यागयागिनिमन्त्रविद्वज्जानदवीसमयानन्दरु
 नगिरिहा॥ ॥ सिंहनादवाङ्मिनात्रदमद्वयत्तदञ्जकृत्यागिनिमन्त्रीदान
 पृथक्शक्तान्धनियुक्ताञ्जवन्धवल्लयीयाकर्तुयालरुनगिरिहायि॥ ॥

नक्रवृद्धः॥

॥ श्यामगन्धर्ववि॥ प्रकृतवर्णकमस्वदिहृज्जकनवर्णं हृदिनहृज्जग
हृत्कमलवीलवत्॥ ॥ नमामि श्योरीमसुनयनमन्धर्नं श्यामकुञ्ज
रुयमूढाधनयलाविधा॥ ॥ ऊगकमंसावलाहृत्तयभादसिधिल
ऊगकमनावांमिदिहृत्तदहिम॥ ॥ यंवयाउवांमिदिहृत्तदहिम
दवीश्रृंथलाहृत्तवायममवेषुमंगलं॥ ॥ अकमुत्रवनधवनयभा

दिदिगा॥

दसिदिमकागागाववनलहिनवाहनमाभि॥ ॥ यममाशगिनिः
सिन्धुवीनकाहृत्तवावाश्रृंथलाहृत्तदहिम
॥ ॥ नाविगका॥ ॥ अदिमकनयिगायवधकाश्वलसहृदामकका
नलकका॥ ॥ धावदकाववनिसंवल्लिमाश्वलसहृदामकका
कका॥ ॥ दिनकनमधुलमधगाश्वकनकाश्वलसहृदामकका॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ दग्धं अग्निं गच्छाय यमिनि रुक्माश्च दवास्तु न वसिष्ठ न मिता ॥ ॥ गम ॥
॥ अक्रिय वनयुग्मिण्युक्ता कृपा काश्च वज्रवाहो दिव्य इति न मिता ॥ ॥
॥ श्यामा वसन्तः ॥ अजय नव नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥
॥ रुक्माश्च ॥ अजय नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥
॥ रुक्माश्च ॥ अजय नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ धनय ॥ अजय नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥
॥ यत्क ॥ अजय नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अजय नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥
॥ अजय नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥
॥ यत्क ॥ अजय नव रुक्म रुक्म वसन्तः शमय वन वदन् वामरु ॥ ॥ श्री ॥

सुवनम् ॥ उयदीय गीहव उयवत्तु ॥ ॥ दिवदवन्नयां विरय नन्नरुधिव
यां विरय सयक अ सांदन वं विरयानश्मवन्नलाडदि विरय सायक वं का मलि
कलनिधिनियित्तवदयंति ॥ ॥ गुवन्नवधमिवन्नसा हयमियविरुगवर्न
मन्नकमम उदकयारि संहलियूजा श्यधवयनिरुगवधि सयकयविरुगविना
हवजलनिसकन्नवम रुहर्ज ॥ ॥ ॥ आगहवयि ॥ निम्मानानिवत्तु

नि॥ ॥ जमामिश्रदवीणीवज्जवानादिश्मद्विसिद्धिदायनिजगगज्जननी
॥ ॥ यूर्वद्वजगगनकवर्धुमिश्रुणीभानयामिनीदवीनीववर्धुमि॥
॥ वायुवामाहिनीदवीभीगवर्धुमिश्रुणीभानयामिनीदवीभीगव
र्धुमि॥ ॥ नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं
धमवर्धुमि॥ ॥ वज्रवर्धुमि॥ ॥ वज्रवर्धुमि॥ ॥ वज्रवर्धुमि॥ ॥

संख्येन वचनस्य दिगम्बरा ॥ ॥ ॥ ~~रामा गुरुविवि~~ ॥ ~~रामा~~ स्वनामकम्
वज्रविरुद्धं धर्मोदयाय निरुतिने शक्यता जायमाना ह्यनमोलवज्रधनुहि
यकमलवत् ॥ ॥ इत्युक्तं वक्तुं यिया रुदयकमलहिया वक्तुं शक्यमिति
द्विवलविष्णुविनाशनस्तथापि नमस्तस्मात्सिद्धिः ॥ ॥ आदिवद्वहिया
ममधनमोलविनासयिष्यतामवक्तुं नीलवर्णं मूर्तिं कृत्वा मन्त्रा

या यत्रीजामने॥ ॥यसादिबद्धहृदिहृजन्मौवृद्धवृत्तीकाङ्गगङ्गधाम
वृक्षस्यवृद्धहृदियत्रकृत्वाया निर्जन्तुवयनिरुमिव॥ ॥गुण्डयद
हानिजयंगलमाकृत्तिरुविरुंगवृक्षमगुन्ववन्नसिलंगनधलियाह
नयिसन्नमवृक्षगुन्वत्वे॥ ॥ ॥**वागहृन्वि**॥अस्मन्मया नदिग
विदिगहृन्वन्धसियमात्रवृद्धवदनेश्वरगङ्गाधामवृन्मिर्लका

नमो गगन उमनर्घं वाजिया नमः ॥ हूं हूं नमामि यन्त्रा किनी यन्त्र
 गति निरुद्धा नता किनी मन्त्रा हं ग्य हं ग्य गा ॥ ॥ यूर्व ड रुत्र यन्त्रि म द कि
 लत्र उरु वन विघ्नमात्र घन इव लि यात्र ॥ ता किनी द्वीपिनि व ड सि क रु ज
 नि धान व गा न र्म गा न व द न ॥ ॥ सिंघिनि वांघिनी जं व क ड ना किनी इव
 द्वां ग य न गुर्क हं हं हं ॥ व ज ता किनी धान व गा न ता किनि व ड ना ता कि

१ गङ्गा मन्त्र ४॥

नि. व. उ. न. द. वी. ॥ ॥ जिन ज न नी द वी ज कि नी उं रू पा य भ न ध य क
मू दा मू ह व न वि ह वि मा श्व क रू क क व ज य ठ इ व दं ग पा क य न म ध नी रू
न द वी ॥ ॥ ॥ **नाग मन्त्र** ॥ गङ्गा मन्त्र वि न य नि मा द व य न व न न
ह्या धि य मि ग ल व य श म नि म क्ता व त्ता रु व धा क रू नी कि व ध म क्ता सि मा ॥
॥ मालिया वि घ्न मालिया द र्प मालिया इ श्व वि ना भ न र्श मालिया मा वा

मान रं गा सा म नू य म द श्व वि ना मि मा ॥ ॥ य य गु वा ना रू ग व ज इ व रू
लि छि या ल द हि न क ना श म स न ध न इ व दं ग म य र्थ य क न ठि वा म ॥ ॥ वि
वि क व क्ता क व क ठि वे धा ज ठा रू म नि म लि का श्व म्पा द ध न रू म्पा द न
ल म्पा या य न मि लि मि लि वा ज र्ने ॥ ॥ न त्ता न न ध न त्ता क लि मा म धि
क म्पा व ज मि रू द ना श दी ना द त्ता न म स रू द ना न म म न म म ग धा धि य मि

॥ ॥ ॥ **॥ राग गान्धारि** यत्क कया ना धा वि न मो ग्री यत्क ह्य नय क म डा
 रु न न्ना श न व निल मा ला ग्री यो ग्गा रा ग्या घ य म्म क नि ह्य पि न ल य न्ना ॥
 ॥ **रूं रूं रूं** का व सं जा क व द ना इ व व ल म्मा द व नी व स म द ह्य को धा धि य थी
 म ह्य का ना श य क्म म न द प्य रु व ली ना र्ग य न व म्म क या ल ध या ॥ ॥ व
 क व उ ना शि नि न य ना ॥ धा व रु यं क व र्ही य म व द ना २ ५ द्य य क्म लि ना पिं

ग ल क्म डा न म क र्म क न्ना म य ॥ ॥ क व टि कां या ना धा वि इ व द्वां ग
 ना ग व व य ना ग क्कु ल ल ल ला २ ना ग निल सि द्धा नो य व ना ग्गा अ र्ना ग्गा
 रु व न स ल्ला रा ॥ ॥ **रूं रूं रूं** का व सं जा क व द ना इ व व ल म्मा द व नी व स म द ह्य को धा धि य थी
 म ह्य का ना श य क्म म न द प्य रु व ली ना र्ग य न व म्म क या ल ध या ॥ ॥ व
 क व उ ना शि नि न य ना ॥ धा व रु यं क व र्ही य म व द ना २ ५ द्य य क्म लि ना पिं

कसवधनधवि॥ ॥ नमामिश्मस्तुथीयप्रनखन्धवाश्मयत्रआसायवि
 यत्रिमडधविना॥ ॥ दहिनथीगगयमिवाभमीमस्तका वाश्मगमम
 तुलमाययकलितहिता॥ ॥ भृष्टिर्महावावेयाविन्धवियायिनाश्
 अस्तुयवह्याधिद्वित्रिमहवन्म॥ ॥ वज्रधनयन्मादिप्रदातरुनयियाश्
 गुनयवममात्रसिद्धिवन्मदा॥ ॥ ॥ रागविरास॥ दिवुजयक

दिवुजयक॥

मूखवकवदनाश्नगममकूठकभीतिनिवाचना॥ ॥ नमोदवीवृद्धज
 किनीविन्धजननीश्चिउवनयापिनजिनकानदायनि॥ ॥ दहिन
 कववज्रविराभिनिदग्धमिश्वामकवाकवतुवमात्रसयिवयि॥
 ॥ मन्निमस्तुलमायडादियानगमनाश्नजननीयवववसकक्यवेभिना
 ॥ ॥ शीविद्याधवीदवीस्वनवमहिनाश्नकवविद्धिसिद्धिदहिममाना

विमकुटविलसगुलगायिशनमस्तु २ वज्र उक्त गुलषयि ॥ ॥

॥ **नागाधरा** ॥ वज्रयागिनिस्तु कनायाश्चिउवननाथदस्मि
या ॥ ॥ यिवयि नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ उच्च नायि विदलकमलसंयाग २ दहिविनामनसंरुद
यि ॥ ॥ उच्चयि नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ मगगुन

शीपव २

युग्मदेवउथेरिषकश्चा ॥ लन्धनीसंसावसमस्तु ॥ ॥ ॥ **नागनिध**
॥ कमलविकासिगुलिगिरान्धनकमपुषियवर्तुसमदे २ वज्रनवद
नकवययदवयप्रनययकाभिगा ॥ ॥ नमामिश्चीमस्तु मस्तु मस्तु मस्तु मस्तु
वगुननायसर्वंगुनश्चमगिदहनस्तुनवययदसर्वरुस्तुननिधियात्रि
ता ॥ ॥ यथमकनदयवज्रयश्चधनमस्तु आनिगलवाजिनाश्चिनीयन्

वज्रयागिनी १॥

कमलविकासिग १॥

कृष्णधररुमीयहानस्कधउथयसर्वरुवधवा॥ ॥ अरुयरुज्जवाभ
 उवनधमवायसुउथवामधृगयसकाश्चत्वमकूठकभीयकालिकिलि
 यरुमधमैत्रिविववा॥ ॥ निवृद्धिवृद्धिस्तयिनेमिगरामिमासुवृरु
 नवियमागवाश्चरुसवन्मगमियवमादिवरुज्जमन॥ ॥ ॥ रागा
 वलादि॥ मगमगस्तथमागवाश्चरुगिनीवृद्धयात्रवास्तुविरुक्कवदस्तु
 मउलनाकाटिस्तथमागवाश्चरुदस्तुदस्तुकोठि

॥ रागा ॥

स्तथमागवाश्चरुगिनीवृद्धयात्रवास्तुविरुक्कवदस्तु॥ ॥ उडुडुकात्रमउल
 लास्तुलिनात्रकागिनिविदयात्रवृज्जधमन्थात्रीका० जालिगतावास्तु
 सकवमाज्य॥ ॥ एवचकविद्रयात्रदकिस्तत्रविस्तुत्रियात्रश्य
 रिमयप्रयकाधनउरुत्रवमधत्रियात्र॥ ॥ मयटयागरुवाठानिह
 नियस्तकठलियात्रशकायवाकविहमउलनास्तुलिनात्रगगदकददि

२०५॥१॥

याये॥ ॥ नृपस नृपस दगा चर्वसुं धिमिलिया धर्मध उहयिश्कर्तुया
नमः कुलचर्या गमवयवादि नयऊनहायि॥ ॥ ॥ **॥ रागावसका ॥** मध
नियुगियवा दयनिकूनालाशकनदवगव वन्दियववत्त॥ ॥ मेदिआदि
वृद्धधीमः ॥ ॥ कूमालाशर्व अरिवच विपन्ननख्यन्धवा॥ ॥ कंकमवृदिवा
सवविनविषमाश्न्यागमिर कवृत्तविहवा॥ ॥ विषयविषमकूठ

२०५॥१॥

यात्रंगमनस्य श्विन्धवियादिम मिर्वगुनस्वर्यं ॥ ॥ म कगुनस्वर्यं विंद
आयाधशगवकि नवंगी कयवनकुलिन्ध॥ ॥ ॥ **॥ रागावसका ॥** निमा
मिश्रिजिनध उकवदक वउवमवमिआलिगीनाश्यकूहनयकूधकूय
य्यावृद्धधर्म आत्रयन्धवा॥ ॥ कनाहं ॥ ॥ उगनसंसात्र उधविषामनाः
हवनमाशुश्यकूजिनन्धवा॥ ॥ नमामिश्रीन्धकियवन्धवसादिसि

दिव्यदायनी २५ लिङ्गहृत् सर्वपापकुर्यं कवदानयययद्रुमाकृषदा ॥
 ॥ नमामि २ धर्मधाम्वागीन्ध्रयोदधवात्रयत्रिमल्लिगा २ धर्मा
 वक्ष्यमर्णमर्णकाया सर्वदेवयत्रिमल्लिगा ॥ ॥ नमामि २ वागीन्ध्रयम
 पुत्रयमगिनिनिववासिगा २ सत्वविभादिगदृष्टविनामनयनमामिडि
 नवकन्धवा ॥ ॥ ॥ **रामागसा** **सव** ॥ वज्रिधात्रिवगात्रिवडाविदवी २ सि

२ वज्रिधात्रिवगात्रिवडाविदवी २ सि ॥

घिनियां घिनिकं वृकडवृकिनि ॥ ॥ नमामि धीयागाम्यत्र रूपनन्धवी
 या २ शिनिनेगदवी ॥ गुरुवनययिमा ॥ ॥ यष्टुडरुत्रयन्धिमदक्रिधादि
 गदवी २ शाकिनिधियिनि २ डसिकवाकनि ॥ ॥ वडवदिगदृष्टमहल
 नडदवी २ शिनिनेगदवी ॥ नाचक्रिदवी ॥ ॥ हविहवक्रा २ डअसूत्र
 गमने २ वा २ डअयागिनि समनहं लावे ॥ ॥ ॥ **रामागनिवडा** ॥ अ

अथ गानि न ३४॥

षयनिर्वृत्तं न अद्वयं अत्र यमं गगनं मधुलमा मध्यापि गाश्च न्यागावि
त्राणि न लीयन्त्या दवी यान विन्दु समजा विना ॥ नमामि निवात्र
मृनिवक्तु रत्नाम्बरं रुद्रं नमस्तस्मै दिगाश्च नद वद समं रुद्रं यकाधि
मृद्रं रुद्रं वद समवापि ना ॥ ॥ एतद्गङ्गा गवति साधि त्रयक वरिभन
मधुलसमं नलीनाश्च निमोलद दयालु चक ध्यापि ना अदि निमिद्रुद्रं

कमलं साधना ॥ ॥ आनन्दयमानं च विवमा सह ऊर्ध्वं नन्दनं च ऊर्ध्वं
वाश्यमानं विवमा मा आनन्दं दिनं महासुखं सुगन्धं समाह्वयिना ॥
॥ हवत्कालं च क्लीबं कसमं नूनं ककाटि सिद्धाया रंगनाश्चोदक
डाडिया न यत्तु गिनिजा रं धनं यत्तु स्वमहासुखं जानद ॥ ॥ ॥ वा
गवत्तुमी ॥ वामं स्वर्णं न धनं ददिनं कनटि श्यायनं लयं नन्दं मालं रुषि

२ गोपगवयो ४॥

न॥ ॥ देवीनाचयि एकजगि वरु यागिनी श्रुतिन नुदवी विरुवनप
 यिमा ॥ ॥ कावमरुदियि पाभनवध २ वागधममाह कवठिन
 दि ॥ ॥ थलसु रुमा निर्नऊ नदवी श्रुन्यया रुदवी धून्य गरावा ॥
 ॥ भृषिसंसावणी कवृदा देवी शमा रुमा गनउ म् सवयिऊ ननी ॥ ॥
 ॥ शवाग कुरुदि ॥ विवधमना नह दिनक वमउ ला श्रुं कावसंरुवक

विवधमना नह ॥

र्ववर्णुदहा ॥ ॥ नमरुं श्रुती हनववाया श्रवज यागिनि आर्लिगधना
 वयि ॥ ॥ विमरुवधठउऊ गुकानश्रिनया श्रिविधकलिभार्धऊठामक
 ठधवा ॥ ॥ यथमरुऊदय कलिभार्ध ० श्रिमीयउऊ नागवमां ग
 वीय ॥ ॥ हमीयउऊ उम नूवदागकया वा श्रवउमडामलुमालावि
 रुविमा ॥ ॥ आलिकालिइयि आर्लिधवाययिश्य धमामिचनलडेका

० विष्णुवन्दन कालिदास ॥ ० विष्णु क म म ॥

प्रवृजगीता ॥ ॥ ॥ राग राधा रवि ॥ विष्णुवन कालिगमप्रविष्णु
नूलायन विनयवर्हि ॥ ॥ नावयिवरुसत्त्वयवमन्ध्र विनयवर्हि
॥ ॥ वसिष्ठसहस्रकी वद दमस्य साहसवर्हि ॥ ॥ वद विह्वय
वविष्णुमिष्णु नूलायनसत्त्ववर्हि ॥ ॥ ॥ राग म सा ल ॥ विष्णु क
मलमध्वरु का वसं रुव श्वरु या मध्वरु वलमकुटा रुव ॥ ॥ नमा

मिंशी वरु मरु माव वी वं २ द व व कालिग व रुव रुव रुव वं ॥ ॥ य
वदिगालिग रु कृ दं द व रु २ मा रुव कालिग मी न्ध माव व नार्थ ॥ ॥ द कि
वयीगाव व यिष्णु न वजी सहि गं २ म फ का रु नार्थ यिष्णु न ना म कं ॥ ॥ य
विमयी व क्ता व व नादि ग व रु २ रु व रा ग ना म रा ग व यी ॥ ॥ उ रु व रु व
वरु वी म्मा मा व लं २ ० या व कालिग व रु ग दि ग्ग ना म न ॥ ॥ य व

१५॥ गिनी वव ७४॥

मामिर्गलाकवी व. गिउमल्लहवर्धं शुगुन्यादभिलेधुकरुनयिबलकलि
र्गं॥ ॥ ॥ १॥ गगल्लकाल॥ अगिनी ववर्धु वधिर्वहानं मद्यमानन
यसिसहं दे२ योडरुयानकयी १०५५ नं अ५५५५ नं महाकाठ बाऊं॥
॥ हं हं का यथा वयवर्धु माहका गवयविवर्गं १ सयकमलवामविदूदि
मीयनववर्धु॥ ॥ वयनगिधूलवकास्यं नागजिनाई कवीयं १

१५॥ गिनी वव ७४॥

कलवकादसकवार्यवक५५५५ उदक५५॥ ॥ गिनिनर्गरीमवदनं
आलिगवसमहं धंसनसकर १५५५ दवरु गा५५५५ रिगांगं नया थारुव
मधिर्गं॥ ॥ रुकदानयगिने आसायववादि गार्थववदयं १५५५ नं
सहजवीरु ववववव सदायवमं॥ ॥ ॥ १॥ गगल्लकाल॥ जिनव
जननीयराधवमनिश्विवासायिसमवसंदरा आलिगव॥ ॥ निव

समययर्गुमावसंयुताश्चालिंगाश्चानन्दनयन॥ ॥ वायसंराग
 समयवर्धिमयनश्चागविवागदयिमागानिषकु॥ ॥ अङ्कलि
 नसंजागविमूवनाश्चननययमवददाशालि मधा॥ ॥ दहादि
 रुचुवनेशीयागामवश्यमामिरूपनन्वरीशालिंगधा॥ ॥
 ॥ रागनाद॥ नमामिश्रिजिनधर्मधुस्वर्युश्रिचुवनञ्जनरुचध

नमामि
 २
 जिनेधर्मधुस्वर्यु॥

र्मधुवागीध्वर्य॥ ॥ नमामिश्रिजिनयश्चिजिननमास्तुदमहमि
 दार्गिहाममहासुखवाया॥ ॥ स्वग्नेमध्यामावचुवनेशीकायाग
 कश्चवडनिर्जिनमहामनिधवा॥ ॥ धर्मेशीमिगुहानन्वरीम
 वश्नेयावमगुलमास्यसुवासुवयी॥ ॥ वामरुद्रपूषकधनधवा२
 दहिनरुस्वर्युञ्जनधवा॥ ॥ श्रीलोकेश्वरमगुलमहासुखवाया२

श्रीगणेशाय नमः ॥

गङ्गाधिपति गङ्गाधीनवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीवक्त्राचार्यवन्द्यमस्तु सर्वं ॥
शून्यनिवाकवज्रगीतवलिगा ॥ ॥ वागवक्त्रवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीमन्मन्त्रनाथव
न्द्यमस्तु सर्वं विजयाश्चन्द्रासहस्रधारीनागवासदस्तु ॥ ॥ नमामि
श्रीमन्मन्त्रनाथ ॥ श्रीगङ्गादिदेववज्रगङ्गागुप्तवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ ॥ यक्षकध्वज
गुरुपद्मगुप्तनाथाश्च श्रीधर्मधामस्तु न नयात्मगुल्लवकगा ॥ ॥

श्रीदेवगणेशाय नमः ॥

गङ्गाधारागङ्गाधीनवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीवक्त्राचार्यवन्द्यमस्तु सर्वं ॥
॥ वागवक्त्रवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीमन्मन्त्रनाथवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीगङ्गादिदेववज्रगङ्गागुप्तवन्द्यमस्तु सर्वं ॥
वज्रविनाशिनी गत्वहानयक ॥ ॥ यिवक्त्रवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीगङ्गादिदेववज्रगङ्गागुप्तवन्द्यमस्तु सर्वं ॥
गङ्गाधारागङ्गाधीनवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ ॥ वागवक्त्रवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीमन्मन्त्रनाथवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीगङ्गादिदेववज्रगङ्गागुप्तवन्द्यमस्तु सर्वं ॥
वन्द्यमस्तु सर्वं ॥ ॥ वागवक्त्रवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीमन्मन्त्रनाथवन्द्यमस्तु सर्वं ॥ श्रीगङ्गादिदेववज्रगङ्गागुप्तवन्द्यमस्तु सर्वं ॥

लननविरुग्गुक्रियासमवय ॥ ॥ गुत्रयभादनदग्निनाभर्नंरु
 नयिकुलदरुआवार्धचनिगा ॥ ॥ ॥ रागरुयवि ॥ कुरुनिर्ला
 ऊनय ॥ रुद्रानन्धरावर्वकात्रकुरुविजमसाना ॥ निवात्यसिमहासरा
 वमामकिस्रसुयत्रीवज्रयागिनी ॥ ॥ नमामिदवीवाग्रवीरसिवज्रा
 रुद्रिषजमत्यना ॥ आलिङ्ग्यविनयसहिता ॥ एकमहवृत्तितावनी

[illegible]

१॥ सरुजसना नरु॥

वज्रयवमाला॥ ॥ ॥ **॥ यागनाट ॥** सरुजसना नरु श्रीरुववाया २
श्रुववनाथदहिविवासा॥ ॥ ॥ उं ऊं यिमहा प्रस गुष्कारिषकेशक
मलकलिमसंयागसंरुवा॥ ॥ ॥ रुानयुधिनिर्दवी विष्णवायिमाशकि
दकिववनामहासहवदागा॥ ॥ ॥ उद्धोधषटनाडिनाययिषवमस्यान
विद्वयवनादवीयालम्बवी॥ ॥ ॥ गुनयमदजूनरुवक्रियाशदहिम

२॥ जेनरु॥

मागासंसावसमूडं॥ ॥ ॥ **॥ यागललिमा** जूनरुवगथगावकाव
संरावत्रवत्रयविरुविविगकलमंशुआ ४८ काववजाभनमूदकंसफ
साधिनरुपनामगय॥ ॥ ॥ वदामगवसवाधिरुलदायकंसर्वजिन
वायिमसरुजकलमंशुगगमलल्लारि मंभूनाकनभारुवसंसावना
भनीविनरुत्रयं॥ ॥ ॥ वज्रयवमानमयंगचाम्मसंरुकीं श्रीवर्मासं

विष्णुयन्त्रयि यत्त्वं २ हं कात्रमक्रयन्त्रगर्हवजसस्यपि गर्विष्याकक
लेर्गं ॥ ॥ यठमलकनसकत्रयकावर्ग्याकककर्ममभुकिनीकलन्यपं २
मठिमिसाधनवर्गदवगावकंलानसलमानियद्विद्विजिजर्गं ॥ ॥
पाद्यादिआवमनदानपत्रपत्रसर्वसमयावकंयवलिगर्विमदकलेर्गं २
महावाह्यदवीरुयवाधिविरुद्रूपंसमयसललानवकचकीरुर्गं ॥

॥ ॥ १ ॥ वाग्रादिर्वैष्टिकं विद्वत्संज्ञादि न कथमस्तु
 लमस्तु ॥ २ ॥ वाग्रादिर्वैष्टिकं विद्वत्संज्ञादि न कथमस्तु
 ॥ नमामि वायुलिखीवज्रयागिनीं अनुराधाधिपदायनीं ॥
 दिक्कृत्तकमस्तु विनिनायनालादि कवचपद्मलिमांश्चिच्छुवनया
 यिनिदहिनकहिरिधविमर्कयविककयावधवि ॥ ॥ वक्रिकुल

॥ वागदिवः ॥

कञ्चिधविहारायकविहृषिनिश्चयकलोभोयुक्तकहियमस्वय
नयभियमालाहृषिगा॥ ॥विष्णुजननेयप्रमगुक्कध्वनीरुवरुय
गावलीवीरेव्वी२सरुजानन्दसुयिनीदवीप्रदिसिद्धिवयपदाय
नी॥ ॥ ॥रागरेव्वी॥वधुगमभाननिप्रगवृक्षावासकिना
गामाङ्गिममद्या२गदलम्भभानभूयकवृक्षाघर्षीकमद्यागुरुकना

गा॥ ॥ॐॐमैजेकलज्जकृशगवक्रिवायुग्राहसदिर्गाविदिर्गवलि
दवगिले२अष्टभम्भनरुगिर्मविप्रव्वप्रनावयिसरुजानन्द॥ ॥
कंकात्रिधात्रावरिकमद्याकालाकलामैधौककागकनागम२कर्त्र
करुप्रवावरिकमद्यासप्रभिजनागमवृटकवृक्षा॥ ॥अदृष्ट
साभैवयात्रनागप्रवधुमद्यावधुमदिनृहा२लश्रीवनाकर्त्रजव

काद्युक्तिरुक्तमद्यामहायज्ञा ॥ ॥ धात्र्यमन्त्रनायकटिक्काअनरु
नागाएवमद्याशकिलिकिलिलावाअरुनरुकाकलिकनागमवर्षन
मद्या ॥ ॥ द्वादशरुजाद्वादशरुवनात्रुवमवेदनाद्वादशनय
नाशरुनायिकरुयालनास्वरुसमयकालिगानिप्रियाययिवदना
॥ ॥ ॥ रागास ॥ विद्वत्कर्मलक्षणम्समसयत्रुमध्वकत्रु

त्रुववीनाश्वीविद्युयारुगएवममरुदवीमरुनेयालयवायिना ॥ ॥
नमामित्रीनेयात्मादवीकिरुवनमागात्रुयादवीत्रीमरुगएवीशसय
त्रसूयासूयवदिनयवर्षअनगमादिसिद्धिवययमदा ॥ ॥ नन्दनव
मिवचन्दनमयवअनगकसूमयालिजाकवदनेशनियर्गमवागमनि
गीर्थअनगगीर्थसूत्रकयवदनी ॥ ॥ अरुहनुअरुयागिनीदवी

अनेगसुत्रकृपाय २७ अहमहालयद्विगुनिववावनी अनेगवि
वा ॥ ॥ विष्णुवियाधिगतायां नीमौदवी अखयनिर्वजनका
मिमय २ अलिमकसवहलदायनी देवी रुमजमर्तुहपायभनना ॥
॥ ॥ **श्यागकामाद** ॥ अविजसंशवकुरुवधुदसादाविमगवक
अधनाश्वामनुकेशवप्यत्रलदांगदहिनैकवठिधना ॥ ॥ नमामि

भीनेनालादेवी २ मात्ररुवरुयहननी ॥ ॥ वडुर्विभनीयी ॥ ॥ वधव
वृष्यकवदभक्तिगुधायशयकमृदासुषिगजंगीवतत्रमित्रमधु
माला ॥ ॥ लंदवदेवी भमिमधुलमास्यसत्रनववदिमववर्ण २ द
वीयागिनी एक दानामामिप्रियप्रगुध्वनी ॥ ॥ श्रीवज्रदेवीप
नाददानयमित्रमनाहर्ष २ सकगुत्रवकलामिलसंधायहनयितल

अग्निनीयवचुः॥

वज्रकलिका॥ ॥ प्रवागका मात॥ अग्निनिवर्तुः कृत्वा विजुः
द्वयजुः एकमूर्त्तं शिनिनकुंडर्ककर्म इष्टक मालंकादुवीर्य॥ ॥
नमामि श्रीमहाकार्य मानवकुरुयह नमः॥ ॥ दहिनेन जुः कवतिनं
अग्निमद्यवियुद्ध नं श्वामजुः मद्यवर्त्तुः वज्रकपावकपुर्त्तुः॥
॥ उद्धकलिका सर्वावृत्ता अग्निमद्यवर्त्तुः मद्यवर्त्तुः नमः शिनिनमालं

धर्मागनी॥

गीवेत्तुः व्याघ्रवर्मकरि हरिणि॥ ॥ दातुः आरुवर्त्तुः अग्निनाग
धीमहाकालसदायधर्म श्वानयगिन्मना हर्वः सर्वमहि सिद्धिफलदं॥
॥ सकृदुपयादयः धर्मधीवज्रदवीभिलं धर्मा श्वानवर्त्तुः कुरुदुरुर्त्तुः
वायो धीवत्तुः वज्रसवर्त्तुः॥ ॥ ॥ प्रवागका मात॥ धर्मागनी
कलाली श्वानमपि कलकभवयन॥ ॥ उद्धकलिका सर्वावृत्ता अग्निमद्यवर्त्तुः मद्यवर्त्तुः नमः शिनिनमालं